

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टात्रिंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये अष्टात्रिंशं दशकम् ॥

श्रीकृष्णरतारर्णनम्

আনন্দরূপ ভগবন্নযি তেহরতারে  
প্রাপ্তে প্রদীপ্তভবদঙ্গনিরীযমণৈঃ।  
কান্তিব্রজৈরির ঘনাঘনমগুলৈর্দ্যা -  
মার্ৎরতী রিরুরুচে কিল বর্ষরেলা ॥ 38.1 ॥

আশাসু শীতলতরাসু পযোদতোযৈ -  
রাশাসিতাপ্তিরিশেষু চ সজ্জনেষু।  
নৈশাকরোদযরিধৌ নিশি মধ্যমাযাং  
ক্লেশাপহস্ত্রিজগতাং ৎরমিহাহরিরাসীঃ ॥ 38.2 ॥

বাল্যস্পৃশাহপি বপুষা দধুষা রিভূতীঃ  
উদ্যৎকিরীটকটকাস্তদহারভাসা।  
শঙ্খারিরারিজগদাপরিভাসিতেন  
মেঘাসিতেন পরিলেসিথ সূতিগেহে ॥ 38.3 ॥

বক্ষঃস্থলীসুখনিলীনরিলাসিলক্ষ্মী -  
মন্দাক্ষলক্ষিতকটাক্ষরিমোক্ষভেদৈঃ।  
তন্মান্দিরস্য খলকংসকৃতামলক্ষ্মী -  
মুন্মার্জযন্নির রিরেজিথ রাসুদের ॥ 38.4 ॥

শৌরিস্ত ধীরমুনিমগুলচেতসোহপি  
দুরস্থিতং বপুরুদীক্ষ্য নিজেক্ষণাভ্যাম্।

आनन्दवाष्पपुलकोदणमगदणदार्द्र -

सुष्टार दृष्टिमकरन्दरसं भरुतम् ॥ 38.5 ॥

देर प्रसीद परपूरुष तापरल्ली -

निलूनदात्र समनेत्र कलारिलासिन्।

खेदानपाकुरु कृपागुरुभिः कटाक्खे -

रित्यादि तेन मुदितेन चिरं नुतोहडुः ॥ 38.6 ॥

मात्रा च नेत्रसलिलासुतगात्ररल्या

स्तोत्रैरभिष्टुतगुणः करुणालयसुम्।

प्राचीनजन्मयुगलं प्रतिबोध्य ताभ्यां

मातुर्गिरा दधिथ मानुषबालरेशम् ॥ 38.7 ॥

एरंप्रेरितसुदनु नन्दतनूजया ते

र्यत्यासमारचयितुं स हि शूरसूनुः।

एरां हस्तयोरधृत चित्तोरिधार्यमार्यै -

रञ्जोरुहसुकलहंसकिशोररम्यम् ॥ 38.8 ॥

जाता तदा पशुपसद्वानि योगनिद्रा

निद्रारिमुद्रितमथाकृत पौरलोकम्।

एरंप्रेरणाय किमिर चित्रमचेतनैर्यद् -

द्वारैः स्वयं र्यघटि सङ्घटितैः सुगाचम् ॥ 38.9 ॥

शेषेण भूरिफणरारितरारिणाहथ

स्त्रैरं प्रदर्शितपथो मणिदीपितेन।

एरां धारयन् स खलु धन्यतमः प्रतस्त्रे

सोहयं एरमीश मम नाशय रोगरेगान् ॥ 38.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टात्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥